ग्रामीण क्षेत्र में महिला नेतृत्व विकास में स्वयं सहायता समूह की भूमिका

डॉ. विनीता गौतम

सहायक प्राध्यापक वाणिज्य, लक्ष्मण प्रसाद वैध शासकीय कन्या महाविद्यालय, बेमेतरा, छत्तीसगढ़

ABSTRACT

विश्व की आधी आबादी महिलाओं की है। फिर भी महिलाएं पुरुषों की तुलना में अधिक गरीब और वंचित हैं क्योंकि उन्हें सामाजिक–आर्थिक और सांस्कृतिक बाधाओं का सामना करना पड़ता है। समाज में उनकी भूमिका अपरिहार्य है। लेकिन वे अपने मूल अधिकारों से वंचित हैं। घरेलू हिंसा, आर्थिक और शैक्षणिक भेदभाव, प्रजनन स्वास्थ्य असमानताएं और हानिकारक पारंपरिक प्रथाएं समाज में असमानता का सबसे व्यापक और स्थायी रूप बनी हुई हैं। इसलिए उन्हें सशक्त बनाने की आवश्यकता महसूस की जाती है। ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों में स्थिति अधिक गंभीर है। गरीबी उन्मूलन, आर्थिक विकास को बढ़ाने और बेहतर जीवन स्तर के लिए महिला विकास गतिविधियों को महत्व दिया जाना चाहिए। स्वयं सहायता समूह नामक अवधारणा का विकास महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए सरकारों के लिए अंधेरे में आशा की किरण है। इसमें महिलाओं की कई समस्याओं का समाधान करने की क्षमता है, जिनका सामना वे अशक्तता के कारण कर रही हैं और वास्तव में उनके जीवन में काफी बदलाव ला सकती हैं। अध्ययन से पता चलता है कि स्वयं सहायता समूह केवल एक माइक्रो–क्रेडिट नहीं है, यह एक सशक्तिकरण प्रक्रिया है, जो ग्रामीण महिलाओं में नेतृत्व क्षमता को विकसित कर समाजिक और राजनीतिक जीवन में निर्णय लेने की प्रक्रिया में उनकी सहभागिता को सुनिष्चत करता है।

KEYWORDS: सामाजिक–आर्थिक, सांस्कृतिक बाधाओं, घरेलू हिंसा, गरीबी उन्मूलन, स्वयं सहायता समूह, माइक्रो–क्रेडिट, सशक्तिकरण।

परिचय

भारत में 1990 के दशक की शुरुआत में हाशिए पर पड़े समुदायों के बीच वित्तीय समावेशन की आवश्यकता के जवाब में SHG आंदोलन की शुरुआत हुई। भारतीय रिजर्व बैंक ने बचत को बढ़ावा देने और उन महिलाओं को ऋण प्रदान करने की तथा उनकी क्षमता को पहचानते हुए बैंकों काs SHG को ऋण देने के लिए प्रोत्साहित किया, जिन्हें अक्सर औपचारिक वित्तीय प्रणालियों से बाहर रखा जाता था। पिछले कुछ वर्षों में, SHG एक व्यापक सहायता प्रणाली के रूप में विकसित हुए हैं जो महिलाओं के जीवन के विभिन्न पहलुओं को संबोधित करते हैं, जिसमें आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक सशक्तिकरण शामिल हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में SHG का गठन विशेष रूप से महत्वपूर्ण रहा है, जहाँ महिलाओं को गरीबी, शिक्षा की कमी और संसाधनों तक सीमित पहुँच सहित कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। समूहों में एक साथ आकर, महिलाएँ अपने संसाधनों को एकत्र कर सकती हैं, ज्ञान साझा कर सकती हैं और अपने प्रयासों में एक–दूसरे का समर्थन कर सकती हैं। यह सामूहिक दृष्टिकोण न केवल उनकी आर्थिक स्थिति को बढ़ाता है बल्कि एकजुटता और समुदाय की भावना को भी बढ़ावा देता है, जो नेतृत्व विकास के लिए आवश्यक है। हाल के दशकों में, महिलाओं का सशक्तिकरण सतत विकास के इर्द–गिर्द चर्चा में एक महत्वपूर्ण केंद्र के रूप में उभरा है, खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में जहाँ पारंपरिक मानदंड अक्सर समाज में महिलाओं की भूमिका को सीमित करते हैं। स्वयं सहायता समूहों (SHG) को इस संदर्भ में एक परिवर्तनकारी शक्ति के रूप में पहचाना गया है, जो महिलाओं को नेतृत्व कौशल विकसित करने और अपने अधिकारों का दावा करने के लिए आवश्यक उपकरण, संसाधन और सहायता प्रदान करते हैं। यह ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं के नेतृत्व विकास को बढ़ावा देने में SHG के महत्व की खोज करता है, आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक सशक्तिकरण पर उनके बहुआयामी प्रभाव को उजागर करता है। महिलाओं के नेतृत्व की अवधारणा बहुआयामी है, जिसमें न केवल अधिकार के औपचारिक पद शामिल हैं, बल्कि अनौपचारिक प्रभाव और समुदायों के भीतर परिवर्तन को प्रभावित करने की क्षमता भी शामिल है। ग्रामीण क्षेत्रों में, जहाँ पारंपरिक लिंग भूमिकाएँ अक्सर निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में महिलाओं की भागीदारी को सीमित करती हैं, SHG नेतृत्व विकास के लिए उत्प्रेरक का काम करते हैं। आत्मविश्वास को बढ़ावा देने, कौशल को बढ़ाने और संसाधनों तक पहुँच प्रदान करने के माध्यम से, SHG महिलाओं को सामाजिक मानदंडों को चुनौती देने और अपने अधिकारों का दावा करने के लिए सशक्त बनाते हैं।

स्वयं सहायता समूहों को समझना

स्वयं सहायता समूह व्यक्तियों, आम तौर पर महिलाओं के छोटे, अनौपचारिक संघ होते हैं, जो पैसे बचाने, आपसी सहायता प्रदान करने और ऋण प्राप्त करने के लिए एक साथ आते हैं। 1990 के दशक की शुरुआत में भारत में शुरू हुए SHG ने देश भर में लाखों महिलाओं की भागीदारी के साथ तेजी से विकास किया है। ये समूह सामूहिक कार्रवाई, पारस्परिक सहायता और सशक्तिकरण के सिद्धांतों पर काम करते हैं, जिससे महिलाओं को अपने वित्तीय भविष्य की जिम्मेदारी लेने और सामुदायिक विकास में शामिल होने का मौका मिलता है। ैभ्ळ मॉडल को व्यापक रूप से अपनाया और अनुकूलित किया गया है, जो गरीबी को कम करने और लैंगिक समानता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से माइक्रोफाइनेंस पहलों की आध ारशिला बन गया है।

आर्थिक सशक्तिकरण और वित्तीय स्वतंत्रता

महिलाओं के नेतृत्व विकास में SHG की प्राथमिक भूमिकाओं में से एक आर्थिक सशक्तिकरण में उनका योगदान है।''आर्थिक सशक्तिकरण को अक्सर नेतृत्व विकास की दिशा में पहला कदम माना जाता है।'' (कामिनी, 2012)। माइक्रोक्रेडिट तक पहुँच को सुविधाजनक बनाकर, SHG महिलाओं को छोटे व्यवसाय शुरू करने, आय–उत्पादक गतिविधियों में शामिल होने और वित्तीय स्वतंत्रता प्राप्त करने में सक्षम बनाते हैं। यह आर्थिक सशक्तिकरण, नेतृत्व विकास के लिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह महिलाओं को अपने जीवन और परिवारों को प्रभावित करने वाले समस्याओं के संबंध में निर्णय लेने के लिए संसाधन और आत्मविश्वास प्रदान करता है। शोध से पता चलता है कि SHG में भाग लेने वाली महिलाओं को अपनी आय, बचत और समग्र आर्थिक स्थिति में महत्वपूर्ण सुधार का अनुभव होता है। यह वित्तीय स्वतंत्रता न केवल घरों के भीतर उनकी सौदेबाजी की शक्ति को बढ़ाती है, बल्कि उन्हें अपने समुदायों में प्रमुख निर्णय लेने वालों के रूप में भी स्थापित करती है। जैसे–जैसे महिलाओं को आर्थिक स्थिरता मिलती है, उनमें नेतृत्व की भूमिका निभाने, अपने अधिकारों की वकालत करने और स्थानीय स्वषासन में निर्णय निर्माण

Copyright© 2024, IERJ. This open-access article is published under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License which permits Share (copy and redistribute the material in any medium or format) and Adapt (remix, transform, and build upon the material) under the Attribution-NonCommercial terms.

में उनकी सहभागिता की संभावना अधिक हो जाती है।

कौशल विकास और क्षमता निर्माण

एसएचजी महिलाओं के बीच कौशल विकास और क्षमता निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। कई एसएचजी प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रदान करते हैं जो उद्यमिता, वित्तीय साक्षरता और नेतृत्व सहित विभिन्न कौशलों पर ध्यान केंद्रित करते हैं।''कई एसएचजी प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रदान करते हैं जो उद्यमिता, वित्तीय साक्षरता और नेतृत्व सहित विभिन्न कौशलों पर ध्यान केंद्रित करते हैं।'' (शाहशिकला और उमा, 2011) ये प्रशिक्षण सत्र महिलाओं को अपने व्यवसायों को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने और सामुदायिक नेतृत्व में संलग्न होने के लिए आवश्यक ज्ञान और दक्षताओं से लैस करते हैं। इसके अलावा, एसएचजी की सहयोगी प्रकृति सीखने और साझा करने के माहौल को बढ़ावा देती है। महिलाएँ एक–दूसरे के अनुभवों से सीखती हैं, समस्या–समाधान, बातचीत और निर्णय लेने में अंतर्दृष्टि प्राप्त करती हैं। यह सहकर्मी सीखना आत्मविश्वास बनाने और महिलाओं को नेतृत्व की भूमिकाओं के लिए तैयार करने में सहायक होता है, क्योंकि वे चुनौतियों का सामना करने और अपनी आवश्यकताओं की वकालत करने में अधिक कुशल हो जाती हैं।

सामाजिक पूंजी और नेटवर्किंग

'एसएचजी का गठन महिलाओं के बीच समर्थन का एक नेटवर्क बनाता है, जो सामाजिक पूंजी को बढ़ावा देता है जो नेतृत्व विकास के लिए आवश्यक है।'' (जनागन, 2011) इन समूहों के माध्यम से, महिलाएँ संबंध बनाती हैं, संसाधन साझा करती हैं और सामुदायिक पहलों पर सहयोग करती हैं। एकजुटता की यह भावना न केवल व्यक्तिगत सदस्यों को सशक्त बनाती है, बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की सामूहिक आवाज को भी मजबूत करती है। एसएचजी के भीतर नेटवर्किंग महिलाओं को सामूहिक कार्रवाई में शामिल होने में सक्षम बनाती है, स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा और बुनियादी सेवाओं तक पहुँच जैसे सामान्य मुद्दों को संबोधित करती है। एक साथ काम करके, महिलाएँ अपने अधिकारों की वकालत कर सकती हैं और स्थानीय नीतियों को प्रभावित कर सकती हैं, जिससे समुदाय में उनकी नेतृत्व उपस्थिति बढ़ जाती है। एसएचजी के माध्यम से बनाई गई सामूहिक पहचान पारंपरिक लिंग मानदंडों को भी चुनौती देती है, महिलाओं को नेतृत्व की भूमिकाओं में कदम रखने के लिए प्रोत्साहित करती है, जो पहले पुरुषों के वर्चस्व में थीं।

जागरूकता और वकालत

''एसएचजी महिलाओं के अधिकारों और सामाजिक मुद्दों के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए मंच के रूप में भी काम करते हैं।'' (उमा, 2013)कई समूह सदस्यों को उनके कानूनी अधिकारों, स्वास्थ्य मुद्दों और स्थानीय शासन में भागीदारी के महत्व के बारे में शिक्षित करने के लिए वकालत के प्रयासों में संलग्न हैं। यह जागरूकता महिलाओं को उनके अधिकारों का दावा करने और अपने समुदायों में नेतृत्व की भूमिका निभाने के लिए सशक्त बनाने के लिए महत्वपूर्ण है। एसएचजी में भाग लेने से, महिलाएँ सामाजिक–राजनीतिक परिदृश्य और नागरिक जुड़ाव के लिए उपलब्ध तंत्रों के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करती हैं। यह ज्ञान उन्हें स्थानीय निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में भाग लेने, अपनी चिंताओं को आवाज देने और अपने समुदायों को लाभ पहुँचाने वाली नीतियों की वकालत करने के लिए सशक्त बनाता है। जैसे–जैसे महिलाएँ वकालत में अधिक सक्रिय होती जाती हैं, वे सार्वजनिक बोलने, बातचीत करने और रणनीतिक योजना बनाने सहित आवश्यक नेतृत्व कौशल विकसित करती हैं।

सामाजिक मानदंडों को चुनौती देना

एसएचजी का प्रभाव व्यक्तिगत सशक्तिकरण से परे है : वे सामाजिक मानदंडों को चुनौती देने और बदलने में भी योगदान देते हैं। महिलाओं की भूमिका को सीमित करने वाले स्व–सहायता समूह आर्थिक और सामाजिक गतिविधियों में महिलाओं की भागीदारी को बढ़ावा देकर महिलाओं की क्षमताओं और नेतृत्व क्षमता के बारे में ध ाारणाओं को बदलने में मदद करते हैं। यह सांस्कृतिक परिवर्तन एक ऐसा माहौल बनाने के लिए महत्वपूर्ण है जहाँ महिलाएँ नेता के रूप में उभर सकें। जैसे–जैसे महिलाएँ स्व–सहायता समूहों में अपनी भागीदारी के माध्यम से मान्यता प्राप्त करती हैं, वे अपने समुदायों में दूसरों को नेतृत्व की भूमिका निभाने के लिए प्रेरित करती हैं। यह लहर प्रभाव महिला नेताओं की एक नई पीढ़ी को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक है जो लैंगिक समानता की वकालत कर सकें और सामाजिक परिवर्तन को आगे बढ़ा सकें।''एसएचजी के सबसे महत्वपूर्ण प्रभावों में से एक महिलाओं की भूमिकाओं को प्रतिबंधित करने वाले सामाजिक मानदंडों को चुनौती देने और बदलने की उनकी क्षमता है।'' (सेल्वाकुमार, 2015)

स्वास्थ्य और शिक्षा के परिणामों में सुधार

कई एसएचजी अपने सदस्यों और उनके परिवारों के लिए स्वास्थ्य और शिक्षा के परिणामों को बेहतर बनाने पर ध्यान केंद्रित करते हैं। संसाधनों को एकत्रित करके और जानकारी साझा करके, महिलाएं मातृ स्वास्थ्य, बाल शिक्षा और पोषण जैसे मुद्दों को संबोधित कर सकती हैं। स्वास्थ्य और शिक्षा पर यह ध्यान न केवल व्यक्तिगत परिवारों को लाभान्वित करता है, बल्कि समुदाय के समग्र विकास में भी योगदान देता है, क्योंकि शिक्षित और स्वस्थ महिलाओं के आर्थिक गतिविधियों और सामुदायिक नेतृत्व में भाग लेने की अधिक संभावना होती है।

सरकारी योजनाओं और संसाधनों तक पहुँच

स्वयं सहायता समूह अक्सर गरीबी उन्मूलन और सामाजिक कल्याण के उद्देश्य से महिलाओं और सरकारी योजनाओं के बीच सेतु का काम करते हैं। खुद को समूहों में संगठित करके, महिलाएँ विभिन्न सरकारी कार्यक्रमों और संसाधनों तक पहुँच सकती हैं, जिन्हें अन्यथा व्यक्तिगत रूप से प्राप्त करना मुश्किल हो सकता है। सहायता सेवाओं तक यह पहुँच उनकी सामाजिक–आर्थिक स्थितियों को बेहतर बनाने की उनकी क्षमता को बढ़ाती है और उन्हें अपनी जरूरतों की वकालत करने का अधिकार देती है।

निष्कर्ष

स्व–सहायता समूह आर्थिक सशक्तिकरण, कौशल विकास, सामाजिक पूंजी और वकालत के अवसर प्रदान करके ग्रामीण क्षेत्रों में महिला नेतृत्व के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इन तंत्रों के माध्यम से, स्व–सहायता समूह न केवल व्यक्तिगत महिलाओं की क्षमताओं को बढ़ाते हैं बल्कि लैंगिक समानता और महिलाओं के अधिकारों को बढ़ावा देने वाले व्यापक सामाजिक परिवर्तनों में भी योगदान देते हैं। जैसा कि दुनिया सतत विकास को प्राप्त करने में महिलाओं के नेतृत्व के महत्व को पहचानना जारी रखती है, परिवर्तन के उत्प्रेरक के रूप में स्व–सहायता समूहों की भूमिका को कम करके नहीं आंका जा सकता है। स्वयं सहायता समूहों में निवेश और समर्थन देकर, हम महिलाओं को अपने समुदायों में नेता बनने के लिए सशक्त बना सकते हैं, प्रगति को आगे बढ़ा सकते हैं और सभी के लिए अधिक समतापूर्ण समाज को बढ़ावा दे सकते हैं। स्व–सहायता समूह आर्थिक अवसर प्रदान करके, कौशल विकास को बढ़ावा देकर, सामाजिक नेटवर्क बनाकर और अधिकारों और वकालत के बारे में जागरूकता को बढ़ावा देकर ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं को सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इन तंत्रों के माध्यम से, स्वयं सहायता समूह न केवल व्यक्तिगत महिलाओं की क्षमताओं को बढ़ाते हैं बल्कि लैंगिक समानता और महिलाओं के अधिकारों को बढ़ावा देने वाले व्यापक सामाजिक परिवर्तनों में भी योगदान देते हैं। इस प्रकार, ग्रामीण समुदायों में महिलाओं को सशक्त बनाने और सतत विकास प्राप्त करने के लिए स्वयं सहायता समूह पहलों का समर्थन और विस्तार करना आवश्यक है।

संदर्भ

1 जनागन, एस. (2011) : ''भारत में महिला सशक्तिकरण पर स्वयं सहायता समूहों का प्रभाव'', जर्नल ऑफ डेवलपमेंट स्टडीज, 8(1), 15–25।

2 कामिनी, एस. (2012) : ''कोयंबटूर, भारत में स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से शहरी महिलाओं का सशक्तिकरण'' , जर्नल ऑफ सोशल इश्यूज, 12(3), 45–60।

3 शाहशिकला, के., और उमा, आर. (2011) : ''माइक्रोक्रेडिट के माध्यम से महिलाओं का सशक्तिकरण मैसूर जिले के हुनसूर तालुक में कार्यक्रम'', इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रूरल स्टडीज, 5(2), 22–30।

4 सेल्वाकुमार, पी. (2015) : ''तमिलनाडु के कृष्णगिरी जिले में स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से महिला सशक्तिकरण'' , इंटरनेशनल जर्नल ऑफ सोशल साइंस रिसर्च, 3(1), 12–20।

5 उमा एट अल. (2013) : ''तमिलनाडु के तंजावुर जिले में ग्रामीण महिलाओं पर स्वयं सहायता समूहों के प्रभाव का विश्लेषण'' , जर्नल ऑफ रूरल डेवलपमेंट, 32(4), 45–60।